अधिक मास

– प्रा. धन्यकुमार जिनपाल बिराजदार

स्वाभिमानी केशव ने अपनी मृत्यु के बाद बच्चों का विवाद टालने की दृष्टि से संपत्ति का विभाजन किया था। बड़ा बेटा अथर्व सरकारी नौकरी करता था तो छोटा बेटा अभिराम फाइनेंस में नौकरी करता था। मध्यवर्गीय परिवार होने के कारण ही हर महीने की एक तारीख की राह देखी जाती थी।

पुत्रों के विवाह के बाद केशव अपनी पत्नी के साथ अलग घर में रहते और समय–समय पर अथर्व और अभिराम के घर जाकर खुशहाली के समाचार पूछते थे । उनके लिए बहुएँ कन्या की तरह थीं। उन्होंने जेठानी और देवरानी के बीच होते विवादों के कारण टूटते परिवारों को देखा था। चाहते थे कि दोनों पुत्र प्यार से रहे, उनमें किसी बात को लेकर संघर्ष न हो। यह भी चाहते थे कि दोनों बहू प्यार–मोहब्बत से रहें और ससुराल का मान–सम्मान रखें। "अपने घर को भूलकर दूसरे का हित देखने मैं एक दिन किसी के घर भी नहीं जा पाता पर बेटियाँ मायका भूलकर जीवन भर पराये घर का हित चाहने जाती हो तो उन्हें भी मान–सम्मान जरूर देना चाहिए। " कहने वाले केशव कभी–कभी बहुओं के साथ मार्केट भी जाते। अवकाश प्राप्ति के बाद पेंशन पाते थे वे। बची रकम से मार्केट में बहू को पसंदीदा आइसक्रीम या पिज़्ज़ा–बर्गर खिलाते। किसी के पूछने पर उत्तर देते," अरे! इसमें मेरा स्वार्थ है! मार्केट में अकेले जाने में कठिनाई होती है। उज्ज्वला भी अब थक गई है, इनका आधार तो जरूर मिलेगा मुझे! बेटे नौकरी में व्यस्त हो तो मेरा धर्म बनता है कि बहुओं को अपनी कन्या मानकर उन्हें मार्केटिंग में साथ दूँ।"

एक दिन मार्केट में सब्जी खरीदते समय छोटी बहू आराध्या के चेहरे पर उदासी देखी। उसने बाहर कुछ खाने से भी इनकार किया। केशव कारण नहीं समझ पाए, सोचा कि बहू ने व्रत रखा होगा। दिनभर निराहार, थकीमांदी बहू को देखकर चिंतित हुए। बेटे से फोन पर जल्दी घर आने और बहू को अस्पताल ले जाने की बात कही पर बेटे अभिराम ने प्रतिसाद नहीं दिया। केशव बहू को घर तक छोड़ने गए, चाय पी रहे थे कि बहू को फोन पर बातचीत करते देखा। हमेशा पिता से खुलकर बात करने वाली बहू को

केशव ने पहली बार धीरे से और छुप–छुपकर बातचीत करते देखा। यहाँ तक कि उसने अपने पिता के साथ बात करने के लिए भी नहीं कहा। केशव उनका वार्तालाप सुनते रहें।

"हां पापा, आपको लानी ही होगी।"

" ....."

"परिस्थिति से उन्हें कुछ लेना देना नहीं है। इसी महीने में नहीं पहनाओगे तो कब पहनाओगे?"

" ....."

" हां जानती हूँ कि चार–पाँच दिन बाकी हैं। आप कुछ भी करना पर उसकी व्यवस्था करना। इनका कहना है कि अधिक मास में दामाद के लिए यह लाना यहाँ की परंपरा है। "

केशव को समझने में देर नहीं लगी। वे जानते थे कि कम वेतन के कारण कर्ज में डुबा बेटा कुछ माँग रहा हो और अधिक मास में बड़े बेटे अथर्व के ससुर ने पूरे एक तोले की अंगूठी पहनाई थी। वे अभिराम की हठ से परिचित थे, बचपन में कई बार छोटी–मोटी वस्तुओं के लिए उसने वैसी हठ की थी। इसलिए छुट्टी के दिन खुद बेटे के घर चले गए और अपनी बहू को बुलाते हुए कहा,"आराध्या! यह लो! अधिक मास में हमारी ओर से यह भेंट!"

"क्या है पापा इसमें!"

"वह तुम देख लो, उज्वला और मैं अपनी पसंद से ले आए हैं।"

डिबिया खोलते ही चौंक गई," पापा! अधिक मास में तो लड़की के पिता अपने दामाद के लिए सोना ले आते हैं। यह तो यहाँ की परंपरा है।"

"बेटी! पेड़ के पत्ते जीर्ण होने से झड़ जाते हैं, उन जीर्ण पत्तों की तरह पुरानी परंपरा को भी झरना आवश्यक है। यदि लड़की के पिता दामाद के लिए सोना खरीदते होंगे तो लड़के का पिता होकर क्यों न हम अपनी बहू के लिए कुछ खरीदें!"

अधिक मास को मलमास या पुरुषोत्तम मास भी कहा जाता है। इस माह में दान करने से दस गुना लाभ मिलता है। अपनी शक्ति के अनुसार गाय, सोना, चांदी, वस्त्र, कन्या, हाथी, घोड़ा आदि दान के

रूप में दिया जाता है। विशेषता सोने के दान से लंबी उम्र मिलती है, यही सोचते हुए दान की परंपरा चल रही होगी। परंतु केशव का अंतिम वाक्य सुनकर आराध्या की आँखों से आँसू बहते रहे। थोड़ी देर पहले ही फाइनेंस से घर आया अभिराम भी सजल नेत्रों से पिता की ओर देख कर बोल पड़ा, "ससुर हो तो मेरे पापा जैसे!"

प्रा. धन्यकुमार जिनपाल बिराजदार, सोलापुर, महाराष्ट्र 9423330737